सदीनामा

सोच में इज़ाफा www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-19 ❍ अंक-4 ❍1 से 28 फरवरी 2019❍ पृष्ठ-28 ❍ R.N.I. No. WBHIND/2000/1974 ❍मूल्य - 10 रूपये

आसनसोल के पुत्रहारा इमाम साहब हमारे गर्व हैं।

मौलवी ईम्मादुल्लाह, नुरानी मस्जिद, जहाँगीर मुहल्ला,
आसनसोल, पश्चिम बंगाल
बेटे का नाम मरहूम शिवगातुल्लाह

सम्पादकीय

हिन्दी समाज की प्रगतिशीलता और राहुल सांस्कृतायन

हिन्दी का लेखक जब कमाने खाने लायक हो जाता है, प्यार-व्यार, शादी-वादी की सीढ़ी पर चढ़ लेता है तब साहित्य साधना की शुरुआत करता है। इसके स्यापे का कोई कारण मुझे समझ नहीं आता। हाँ, एक बार मन जरूर होता है कि थोड़े कारण खोजें जायें या उन मनीषियों को रेखांकित किया जाये जिनसे हम कुछ रास्ता खोज सकते हैं।

ऐसी ही एक विभूति हैं, महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन। 1963 की 14 अप्रैल को स्वर्गवासी हुये राहुल बहुभाषाविद् थे और यात्रा साहित्य के साथ विश्वदर्शन के क्षेत्र में साहित्यिक योगदान किया। बौद्ध धर्म पर उनका शोध हिन्दी में युगांतकारी माना जाता है। आज लेखक दलित लेखक बनते ही बाबा अम्बेदकर से बौद्ध धर्म की ओर चल पड़ते हैं। थोड़ा और अध्ययन करके दलित-लेखक कहलाने की मंशा रखें तो आजीवक धर्म या मक्खलि घोषाल को समझें नर्जम विचार का पुर्नजन्म नहीं होता पर धर्म दिखने लगता है।

माउस के एक क्लिक से मैटर प्रिंट करके याद करने बोलने वालों को राहुल की खच्चर कथा याद रखनी चाहिए। वे किस तरह हजारो मील दूर पहाड़ों, मठों से पुराने ग्रंथ खोज कर लाये। आजमगढ़ की अतरैलिया। तहसील के कनैला के पंडित केदारनाथ पाण्डेय की मेधा को साहित्य, अध्यात्म, ज्योतिष. विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति भाषा, संस्कृति और दर्शन में बांटकर नहीं देख सकते।

वे एक ऐसे घुमक्कड़ थे, जो सच्चे ज्ञान की तलाश में था और जब भी सच को दबाने की कोशिश की गई तो वह बागी हो गया। वेदान्त के अध्ययन के पश्चात् जब उन्होंने मंदिरों में बलि चढ़ाने की परम्परा के विरुद्ध व्याख्यान दिया तो अयोध्या के सनातनी पुरोहित उन पर लाठी लेकर टूट पड़े। बाद में जब वे मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए तो उन्होंने तत्कालीन सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी में घुसे सत्तालोलुप सुविधापरस्तो की तीखी आलोचना की और उन्होंने आन्दोलन के नष्ट होने का कारण बताया। सन् 1947 में अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष रूप में उन्होंने पहले से छपे भाषण को बोलने से मना कर दिया एवं जो भाषण दिया, वह अल्पसंख्यक संस्कृति एवं भाषाई सवाल पर कम्युनिस्ट पार्टी की नीतियों के विपरीत था। नतीजन पार्टी की सदस्यता से उन्हें वंचित होना पड़ा, पर उनके तेवर फिर भी नहीं बदले। इस कलावधि में वे किसी बंदिश से परे प्रगतिशील लेखन के सरोकारों और तत्कालीन प्रश्नों से लगातार जुड़े रहे। इस बीच मार्क्सवादी विचारधारा को उन्होंने भारतीय समाज की ठोस परिस्थितियों का आकलन करके ही लागू करने पर जोर दिया। अपनी पुस्तक 'वैज्ञानिक भौतिकवाद' एवं दर्शन-दिग्दर्शन में इस सम्बन्ध में उन्होंने सम्यक् प्रकाश डाला। अन्ततः सन् 1953-54 के दौरान पुनः एक बार वे कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बनाये गये। अपनी तमाम अच्छाइयों के बावजूद मार्क्सवाद आज भारत की मुख्य राजनैतिक पार्टी की विचारधारा नही है।

एक कर्मयोगी योद्धा की तरह राहुल सांकृत्यायन ने बिहार के किसान-आन्दोलन में भी प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1940 के दौरान किसान-आन्दोलन के सिलसिले में उन्हें एक वर्ष की जेल हुई तो देवली कैम्प के इस जेल-प्रवास के दौरान उन्होंने ''दर्शन-दिग्दर्शन'' ग्रन्थ की रचना कर डाली। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के पश्चात् जेल से निकलने पर किसान आन्दोलन के उस समय के शीर्ष नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित साप्ताहिक पत्र हुंकार का उन्हें सम्पादक बनाया गया। ब्रिटिश सरकार ने फूट डालो और राज करो की भाँति अपनाते हुए गैर कांग्रेसी पत्र-पत्रिकाओं में चार अंकों हेतु गुण्डों से लड़िये शीर्षक से एक विज्ञापन जारी किया। इसमें एक व्यक्ति गाँधी, टोपी व जवाहर बण्डी पहने आग लगाता हुआ दिखाया गया था। राहुल सांस्कृत्यायन ने इस विज्ञापन को छापने से इन्कार कर दिया पर विज्ञापन की मोटी धनराशि देखकर स्वामी सहजानन्द ने इसे छापने पर जोर दिया। अन्ततः राहुल ने अपने को पत्रिका के

सम्पादकीय

सम्पादन से ही अलग कर लिया। इसी प्रकार सन् 1940 में बिहार प्रान्तीय किसान सभा के अध्यक्ष रूप से जमींदारों के आतंक की परवाह किये बिना वे किसान सत्याग्रहियों के साथ खेतों में उतर हँसिया लेकर गन्ना काटने लगे। प्रतिरोध स्वरूप जमींदार के लठैतों ने उनके सिर पर वार कर लहुलुहान कर दिया पर वे हिम्मत नहीं हारे। इसी तरह न जाने कितनी बार उन्होंने जनसंघर्षों का सक्रिय नेतृत्व किया और अपनी आवाज को मुखर अभिव्यक्ति दी।

सन् 1923 से उनकी विदेश यात्राओं का सिलसिला शुरु हुआ तो फिर इसका उनके जीवन के साथ ही हुआ। ज्ञानार्जन के उद्देश्य से प्रेरित उनकी इन यात्राओं से श्रीलंका, तिब्बत, जापान और रूस की यात्राएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। वे चार बार तिब्बत पहुँचे। वहाँ लम्बे समय तक रहें और भारत की उस विरासत का उद्धार किया, जो हमारे लिए अज्ञात, अलक्ष्य और विस्मृत हो चुकी थी।

अध्ययन-अनुसंधान की विभा के साथ वे वहाँ से बहुत सारी सामग्री लेकर लौटे, जिसके कारण हिन्दी भाषा एवं साहित्य की इतिहास संबंधी कई पूर्व निर्धारित मान्यताओं एवं निष्कर्षों में परिवर्तन होना अनिवार्य हो गया। साथ ही शोध एवं अध्ययन के नए क्षितिज खुले।

भारत के संदर्भ में उनका यह काम किसी ह्वेनसांग से कम नहीं आँका जा सकता। बाह्य यात्राओं की तरह इन निबंधों में उनकी एक वैचारिक यात्रा की ओर भी संकेत किया गया है, जो पारिवारिक स्तर पर स्वीकृत वैष्णव मत से शुरु हो, आर्य समाज एवं बौद्ध मतवाद से गुजरती हुई मार्क्सवाद पर जाकर खत्म होती है। अनात्मवाद, बुद्ध का जनतंत्र में विश्वास तथा व्यक्तिगत संपत्ति का विरोध जैसी कुछेक ऐसी समान बाते हैं, जिनके कारण वे बौद्ध दर्शन एवं मार्क्सवाद दोनों का साथ लेकर चले थे।

राष्ट्र के लिए एक राष्ट्र भाषा के वे प्रबल हिमायती थे। बिना भाषा के राष्ट्र गूंगा है, ऐसा उनका मानना था। वे राष्ट्रभाषा तथा जनपदीय भाषाओं के विकास व उन्नति में किसी प्रकार का विरोध नहीं देखते थे।

समय का प्रताप कहे या मार्क्सवादी के रूप में उनके मरने की इच्छा कहें, उन्होंने इस आयातित विचार को सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान 'परमब्रह्म' मान लिया और इस झोंक में वे भारतीय दर्शन, धर्म, संस्कृति, इतिहास आदि के बारे में कुछ ऐसे बातें कह बैठे या निष्कर्ष बैठे, जो उनकी आलोचना का कारण बने।

उनकी भारत की जातीय-संस्कृति संबंधी मान्यता, उर्दू को हिन्दी (खड़ी बोली हिन्दी) से अलग मानने का विचार तथा आर्यों से 'वोल्गा से गंगा' की ओर कराई गई यात्रा के पीछे रहने वाली उनकी धारणा का डॉक्टर रामविलास शर्मा ने तर्कसम्मत खंडन किया किया है। मत-मतांतर तो चलते रहते हैं, इससे राहुलजी का योगदान और महत्व कम नहीं हो जाता।

बौद्ध धर्म और मार्क्सवाद दोनों का मिलाजुला चिंतन उनके पास था, जिसके आधार पर उन्होंने ने भारत के निर्माण का मधुर स्वप्न संजोया था, जिसकी झलक हमें उनकी पुस्तक 'बाईसवीं सदी' में भी मिल जाती है। राहुल सास्कृत्यायन ने अपने कर्तृत्व से हमें अपनी विरासत का दर्शन कराया तथा उसके प्रति हम सबमें गौरव का भाव जगाया।

हिन्दी समाज के अपने शक्ति स्तोत्र हैं, कथाएँ हैं, विभूतियाँ हैं, विस्मृत विचार हैं। विलुप्त पोथियाँ हैं, गुरुद्वारों में गुरुमुखी लिपि में लिखा हिन्दी साहित्य है। हर रचनाकार को अपनी रचनात्मकता के साथ कम से कम एक विषय पर लगातार लिखना चाहिए।

जीतेन्द्र जितांशु

9231845289

Advertisement Rate Tariff

Last Cover	₹ 10,000
Inside Covers	₹ 8,000
Coloured Advertisements	₹ 5,000
B/W Advertisements FULL PAGE	₹ 6,500
B/W Advertisements (Half Page)	₹ 4,000
Bottom Strips (15 cm x 5 cm)	₹ 1,000
Size-Overall	26 cm x 17 cm
Full Page(Print Area)	24 cm x 15 cm

पत्रिका का ताना-बाना

संपादक :

जीतेन्द्र जितांशु

jjitanshu@yahoo.com

सम्पादकीय सलाहकार

यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक

तितिक्षा

मिनाक्षी सांगानेरिया

संरक्षक मंडल :

आरती चक्रवर्ती

एच॰ विश्ववाणी

शिवेन्द्र मिश्र

राजेन्द्र कुमार रुइयां (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार

राजेश्वर राय

रमेश कुमार कुम्हार

मारिया शमीम

पत्राचार का पता :

संपादक - सदीनामा

38E, Ground Floor
Prince Bakhtiar Sah Road
Kolkata - 700 033

West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

www.sadinama.in

लघु कथा

ऊँचाई

''और हलवा की एक कतरी भी टूटी नहीं... अम्मा की अवाक।''अम्मी ने चोटी गूंथते हुए रूबीना को अपने जिये हुए पलों से कुछ खट्टी मीठी यादें सांझा की।

''ओह हाऊ नाइस ममा! आपको कितना मजा आया होगा जब दादाजी और अब्बू आपके सलीके से खाने बनाने की तारीफ की होगी। दादीजी तो बस मुँह बना कर रह गई होंगी। सोचा होगा हलवे की एक कतरी भी अगर टूटी तो बस फजीहत कर देगी।'' रूबीना रौ में बोली जा रही थी।

''नंही बिटिया, वो सास थी मेरी। उनके अनुभवों से ही गृहस्थी सहेजी। बुजुर्ग का साया पेड़ की छांव।'' अम्मी की आँखों में मरहूम सास की तस्वीर नजर आयी।

रूबीना अवाक अम्मी की चेहरा देखती रही। अम्मी की ऊँचाई छूने के लिए उसके हाथ अनायास ही उनकी ओर बढ़ चले।

फरीदा खातून

द्वारा मोहम्मद यूनुस परवेश

नेलशन रोड, मारवाड़ी कल, हाजीनगर,

उत्तर 24 परगना, पिन-743135

नैहटी, पं.बं॰

इंटरनेट पर पत्रिका उपलब्ध है।

www.notnul.com

तथा

www.sadinama.in

हमारा ई-मेल

sadinama2000@gmail.com

आलेख

मॉरिशस में हिन्दी : एक सर्वेक्षण

1901 में अंग्रेजी हुकूमत की एक शिक्षा-रिपोर्ट छपी थी, जिसके मुताबिक मॉरिशस के भारतीय गिरिमिटिए मजदूरों के 6-16 वर्ष के 52,000 बच्चों में से केवल 6,000 बच्चे सरकारी स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। बाकी के 46,000 बच्चे अनपढ़ और निरक्षर थे। 1901 ही में युवा करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटते समय संयोग से मॉरिशस पधारे, क्योंकि उनका जहाज 'नौशेरा' खराब हो गया था और मरम्मत के लिये पोर्ट लुई बंदरगाह में 19/20 दिनों के लिए लंगर डाले था, यह नवम्बर की बात है। गाँधी ने उपरोक्त रिपोर्ट का जायजा लिया था और आस-पास के गाँवों का बग्घी द्वारा दौरा भी किया था और पाया कि भारतीय मूल के लोगों की स्थिति बहुत दयनीय है।

ये भारत लौटे तो अपने हमवतनों को मॉरिशस में कह कर गए कि (1) आप अपने बच्चों को शिक्षित करो और (2) उन्हें राजनीति में जाने के लिए प्रेरित करो।

गाँधी को एक ऐसे कर्मठ व्यक्ति की खोज थी जो मॉरिशस आकर यहाँ के पिछड़े भारतीयों की सेवा करे और फ्रेंच तथा अंग्रेजी औपनिवेशिक अत्याचार-व्यभिचार से बाहर निकाले, कांग्रेस अधिवेशनों में (कोलकाता अधिवेशन- 24 दिसम्बर 1901) उन्होंने कई बार मॉरिशस में भारतीयों की दुखद स्थिति की चर्चा की और अपनी चिंता जताई, पहले गाँधी ने सरदार पटेल को यहाँ आने की बात कही थी। पर उनका भारत में रहकर काम करना अधिक आवश्यक था।

1901 में गए गाँधी जी ने मणिलाल मगनलाल डॉक्टर को यहाँ, 1907 में भेजा। मणिलाल बड़ो के थे और मुंबई में कानून पढ़े थे, पर अंतिम साल की कानूनी पढ़ाई के लिए लंदन गए थे। वहीं गांधी जी उनसे मिले थे। मणिलाल यहाँ पहुँचते ही कोर्ट में भारतीयों के पक्ष में लड़ने लगे। उनके अधिकार के लिए रॉयल कमीशन के सामने भारतीय गिरमिटियों के हित के लिए संघर्ष किया और कई प्रस्ताव पेश किये। यथा :-

1. मजदूरों पर हो रहे अत्याचारों की जाँच हो (2) छोटे किसानों के लिए सहकारिता संगठनों का गठन हो, (3) विधान सभा में भारतीयों का प्रतिनिधित्व हो (4) सरकारी स्कूलों में भारतीय भाषाएँ पढ़ाने की व्यवस्था सरकार द्वारा हो, आदि।

मणिलाल ने देशव्यापी गिरमिटियों से संप्रेषण के लिए मुसलमान व्यापारियों के सहयोग से 1909 में भारत से मुद्रण प्रेस मंगाया और 'हिन्दुस्तानी' अखबार निकाला। यह साप्ताहिक अंग्रेजी -गुजराती में था। जल्दी भूल सुधार हुई और 'हिन्दुस्तानी' अंग्रेजी-हिंदी में निकलने लगा। यह बाद में चलकर दैनिक भी हुआ। लेखागार में 'हिन्दुस्तानी' को एक-दो ही प्रतियाँ सुरक्षित हैं। सब अंग्रेजी तानाशाहों ने नष्ट कर दीं।

मणिलाल इस तरह मॉरिशस में हिन्दी तथा हिन्दी पत्रकारिता के जनक हुए। वरना इससे पहले भारतीयों ने इस मुल्क में देवनागिरी देखी ही नहीं थी। वे गांधी से संपर्क रखे हुए थे। मणिलाल लड़ रहे थे कोर्ट में, अखबार से और जगह-जगह जाकर हिन्दी में जोशीले भाषण देकर। तभी से भारत से आए (बिहारी, मुसलमान, तमिल, तेलुगु, मराठी, गुजराती) संपर्क बोली भोजपुरी से हिन्दी में उतरने लगे। पाँच वर्षों तक हमारी सेवा कर वे गांधी जी के यहाँ लौटे और फिर फीजी चले गये। पर अधिकार और जागरूकता की चिंगारी यहाँ छोड़ गए। गिरमिट ताबड़तोड़ अपनी संतानों को शिक्षित कराने में लग गए। गाँव-गाँव में 'बैठका' खुली और हिंदी की संध्याकालीन पढ़ाई भी जोर-शोर से आरम्भ हो गई।

2. हिन्दी का कारवाँ चल पड़ा

मणिलाल जाते समय आर्य समाज को मुद्रण प्रेस सौंप गए। आर्य समाज के वे प्रेरक निर्माता थे, वैसे भी आर्य समाज की स्थापना यहाँ 1903 में हो गई थी, पर सच्ची स्थापना 10.04.1910 मणिलाल ने की। वे रंगून गए जहाँ से अपने मित्र के दामाद डॉ॰ चिरंजीवी भारद्वाज को यहाँ भेजा, जो इंग्लैण्ड में पढ़े थे और भारत में एकमात्र FRCS थे। साथ ही, सत्यार्थ प्रकाश के पहले अंग्रेजी अनुवादक, आर्य समाज के जबरदस्त प्रचारक थे। दिन में काम और शाम को गाँव-गाँव आर्य समाज और हिन्दी का का प्रचार करते। उनकी पत्नी सुमंगली देवी महिला हिन्दी शिक्षा

में लग गईं। समाज की शाखाएँ धड़ाधड़ खुलने लगी और समाज चंद ही वर्षों में हिन्दी प्रचार-प्रसार की मशीन बन गया। हिन्दुस्तानी दैनिक बंद हो गया था। पर उससे पहले ही 1911 में आर्य समाज का पहला हिन्दी पत्र निकला 'मॉरिशस आर्य पत्रिका'। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं से ही हिन्दी का प्रचार-प्रसार हुआ और हिन्दू, हिन्दी का देवनागरी छपा रूप देखने-पढ़ने लगे, एक पत्र बंद होता तो दूसरा निकले लगता। यथा:

1) हिन्दुस्तानी 1909-1913, 2) मॉरिशस आर्य पत्रिका 1911-1923, 3) जी ओरिअंटल गजट 1912-1914, 4) मॉरिशस इंडियन टाईम्स 1920-1924, 5) आर्य वीर 1929-1932, 8) वसंत 1930, 9) सनातन धर्मार्क 1933-1942, 10 दुर्गा 1935-1937 (हस्तलिखित)

डॉ. चिरंजीवी अस्वस्थ होकर भारत लौट गए। 1935 में मजदूर दल बना। उसी वर्ष हिन्दी प्रचारिणी सभा ने हस्तलिखित मासिक 'दुर्गा' हिंदी निकाली, जिसका गुप्त हस्तांतरण होता था। यह संस्था हिंदी की शिक्षा-दीक्षा में आगे आई और आज भी प्रयाग से परीक्षाएँ आयोजित कर रही है। पाठ्य पुस्तकें तैयार कर रही है देशव्यापी शाखाओं की देख-रेख कर रही है।

इस हिन्दी अभियान में और स्वयंसेवी संस्थाएँ आईं। आर्य रवि वेद प्रचारिणी सभा और राजपूत महासभा की साथ-साथ जिनमें हिंदू महासभा भी है, पर पत्र-पत्रिकाएँ आती रही... जाती रहीं। पिछला हिंदी साप्ताहिक 'स्वदेश' (1986-1989) था और संपादक मैं स्वयं था।

1935 से लगातार तीन सालों तक हस्तलिखित मासिक हिंदी 'दुर्गा' हिंदी प्रचारिणी सभा ने निकाली और उसी से स्थानीय लेखक,कवि पहली बार देखने को मिलें जिनमें भगत बंधु अग्रणी थे। अनुज मधुकर ही भगत ने पाँच दशकों तक कवितायी दुनिया में छाए रहकर 50 काव्य संकलन दिए। मजदूर दल के नेता, हमारी आजादी के संघर्षकर्ता, प्रथम प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम,स्वतंत्रता से पूर्व 1949 में ब्रिटिश उपनिवेश सरकार में शिक्षा ऑफिसर थे। उन्होंने देश के राज्यपाल से कहकर भारत सरकार से हमारे यहाँ हिन्दी के विकास के लिए मदद मांगी। मॉरिशस को हीरे के रूप में 13 भाषाओं के ज्ञाता ग्रेजुएट प्रो. रामप्रकाश मिले, व्यक्तितत्व के धनी और प्रकांड महाविद्वान ने न सिर्फ हिंदी के योद्धा तैयार किए अपितु पाठ्य पुस्तकें भी तैयार कराईं। सरकारी तंत्र में हिंदी सुचारू करवाई। हिंदी की इज्जत गैर भारतीय करने लगे। आजाद मॉरिशस की फौज खड़ी की। लेखक, कवि, रचनाकार कुरेद-कुरेद कर तैयार किए। आपका यह नाचीज उन्हीं के उत्पादन में से है। मेरे जैसे इस देश में सैकड़ों हैं जो उनके शिष्य हैं, जो उनके कायल हैं। शिवसागर रामगुलाम आजाद मॉरिशस (12 मार्च 1968) में भारतीय भाषाओं के पितामह बनें। विकास के लिए रास्ते खोले, अवसर पैदा किए, सरकारी पैसे लगाए। आज मॉरिशस में स्थापित विश्व हिंदी सचिवालय उन्हीं का सपना है और उन्हीं का बच्चा।

दो हिन्दी सेनानी :- जे. एन. रॉय और पं. वासुदेव विष्णुदयाल।

शिवसागर रामगुलाम 1921 में डॉक्टरी पढ़ने इंग्लैण्ड गए। पर उनसे पहले सन् 1837 में जयनारायण रॉय और उनके बाद बासुदेव विष्णुदयाल 1939 में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पककर भारत में पढ़कर, गाँधीवाद में रम कर मॉरिशस लौट गए थे।

जयनारायण रॉय

जयनारायण राय 16 वर्ष की उम्र में शिक्षा प्राप्त करने 1925 में भारत आए। उन्होंने इलाहाबाद में कानून पढ़ा था। मदन मोहन मालवीय और पं. बनारसीदास चतुर्वेदी उनके अभिभावक थे। बिहार के भूकंप (1935) में गांधी जी के आह्वान पर स्वय सेवक बनकर वे मीनापुर गए जहाँ सैकड़ों मरे और लाखों बेघर हुए थे। वे मॉरिशस लौटे तो माध्यमिक कॉलेज खोला। हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान बने और सक्रिय राजनीति में आए। इन्हीं माध्यमों से उन्होंने बुनियादी और ठोस हिन्दी की सेवा की और साहित्य भी रचा। देश का पहला नाटक (संजीवनी-1941) रॉय ने ही लिखा था।

पं॰ वासुदेव विष्णुदयाल

वासुदेव विष्णुदयाल कोलकाता से अंग्रेजी में एम. ए, कर के लौटे तो खून गरम था। राधाकृष्णन के शागिर्द-टैगोर और सुभाष से प्रभावित गाँधी, नेहरू, पटेल से मिलकर आए थे। सांस्कृतिक उत्थान, हिंदी अभियान पढ़ाई-लिखाई, भाषा प्रचार,